श्री जी गोसदन
नोएडा

गो संदेश

वर्ष : 12 • अंक : 12 • मार्च, 2025

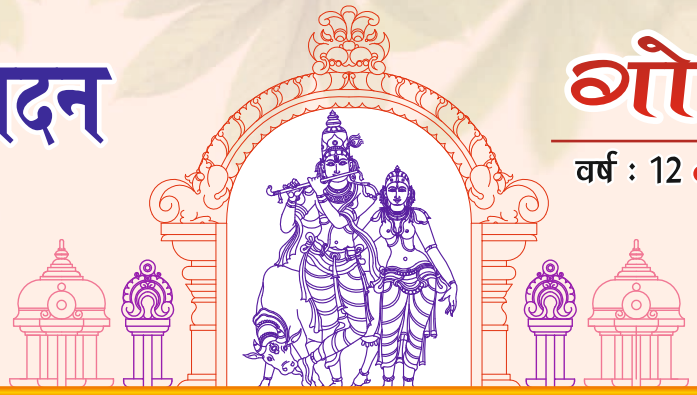

सम्पादकीय

परम स्नेही बन्धुवर व भगिनी,

सादर अभिवादन।

आशा है सपरिवार सानन्द होंगे। इस सत्र का यह अंतिम गो सन्देश आपके हाथों में है। अभी 29 मार्च को सम्पन्न संयोजक मण्डल की बैठक में सीए विकास अग्रवाल जी व श्री सुशील भारद्वाज जी को क्रमशः अध्यक्ष व महासचिव सर्व सम्मति से चुना गया है। उनको इस उत्तरदायित्व के लिए कोटिशः शुभकामनाएँ। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि आप दोनों मिलकर ऊर्जावान व अधिक कार्यशील टोली गौशाला कार्यकारिणी के रूप में बनायेगें। डा. महेश अग्रवाल जी को भी संयोजन मण्डल ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष का उत्तरदायित्व दिया है, उनको भी कोटिशः शुभकामनाएँ।

गौशाला के निर्माण को लगभग 25 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। नोएडा अथोरिटी व जिला प्रशासन ने जो जिम्मेदारी सनातन धर्म सेवा समिति व भारत विकास परिषद, नोएडा को जिस आशा से सौंपी थी, आज श्री जी गो सदन ने पूरी निष्ठा के साथ उसके निर्वाहन का प्रयास किया है। आज श्री जी गो सदन द्वारा संचालित यह गौशाला अपने सम्पूर्ण गोवंश की उचित देखभाल कर रही है। सबसे बड़ी विशेषता हमारी है कि हमने अपने गोवंश की उपयोगिता व अनुपयोगिता के आधार पर नहीं बाँटा। हमने सभी का पालन पोषण बहुत ही सेवा भाव से किया है। हमारे लिये बछिया या बछड़ा एक समान है। गौशाला का संचालन हम सभी ने बड़े ही करुणा भाव व संवेदना के उच्च आदर्श को ध्यान में रख कर किया है। मैं दावा कर सकता हूँ कि हमने कभी भी किसी गाय को दूध के लिए मारा–पीटा हो या इंजेक्शन का प्रयोग किया हो। नवजात बछड़े व बछडियों को जितनी आवश्यक मात्रा में दूध की मात्रा चाहिए उतना अवश्य ही दिया है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हमारी गौशाला का दूध बहुत ही सात्विक है। इसके प्रयोग से परिवार में सात्विक गुणों को आना अवश्य सम्भावी है। जो परिवार गौशाला से जुड़ने के बाद भी इस अमृततुल्य दूध से वंचित हैं, उनको कहीं न कहीं प्रभु कृपा कम मिल रही है।

आज गौशाला का प्रबंधन अच्छा चल रहा है। डा. ए. के. अग्रवाल जी के नेतृत्व में Eminent संस्था के माध्यम से डा. आई. डी. शर्मा जी पूरी टीम गायों की स्वास्थ्य रक्षा में पूरी

शेष पृष्ठ 3 पर...

अध्यक्ष की कलम से

परम स्नेही मित्रगण,

स्नेह नमन!

मैं समस्त श्री जी गोसदन परिवार की ओर से आप सभी स्वजनों की समृद्धि, खुशहाल जीवन की ईश्वर व गौमाता से कामना करता हूँ, आप सभी परिवारजनों का जीवन सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहे।

मित्रों 1 मार्च, 2025 का हवन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। हवन में लगभग 400 से 450 लोग उपस्थित रहे। गौमाता का आशीर्वाद लिया एवं प्रसाद ग्रहण किया।

प्रिय मित्रों आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि संयोजक मण्डल की बैठक में अध्यक्ष का दायित्व श्री विकास अग्रवाल जी एवं महासचिव का दायित्व श्री सुशील भारद्वाज जी को दिया गया। इन दोनों के नेतृत्व में नई कार्यकारिणी के गठन से आप सभी को जल्द ही सूचित किया जायेगा। मैं आपसे उम्मीद करता हूँ जिस तरह से स्नेह एवं सहयोग मुझे दिया है उसी तरह का सहयोग आगे आप नई कार्यकारिणी को देते रहेंगे।

मित्रों 9 मार्च, 2025 को भारत विकास परिषद ने नव निर्मित हाल का लोकार्पण करके गौशाला को समर्पित किया। इसके लिए भारत विकास परिषद नोएडा को बहुत–बहुत आभार एवं साधुवाद।

मित्रों आप सभी लोगों से अनुरोध है कि किसी भी धार्मिक व सामाजिक कार्यों के लिए इस हॉल का उपयोग कर सकते हैं।

मित्रों इसी कड़ी में श्री राम कृष्ण सेवा संस्थान दिल्ली द्वारा एक बाड़ा गौशाला को समर्पित किया, इसके लिए श्री राम कृष्ण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

मित्रों नोएडा जैसे शहर में घरों पर गाय पालना सम्भव नहीं है, इसी विषय को ध्यान रखकर पूज्य संत श्री विजय कौशल जी महाराज ने प्रत्येक परिवार को गौशाला में एक गाय अडॉप्ट करने का आव्हान किया था। इसी प्रकल्प के तहत् आप एक गाय अंगीकरण कर सकते हैं। जिसकी देखभाल गौशाला करती है। इसी कड़ी में हम प्रत्येक वर्ष गो अंगीकरण दिवस मनाते हैं, यह उत्सव 23 मार्च, 2025 को बड़े

शेष पृष्ठ 3 पर...

मासिक हवन

दिनांक : **रविवार, 13 अप्रैल, 2025** • समय : **प्रातः 9.00 बजे** • स्थान : **गोशाला प्रांगण**

यजमान : **स्वाति महेश्वरी**, फेस 2, मयूर विहार, दिल्ली; **श्री अरूणाचल** c/o **श्री पी.एल. कपूर**, से. 26, नोएडा; **श्री विक्रम चावला**, सरिता विहार, दिल्ली; **श्री विकास अग्रवाल**; **श्री राजेश खन्ना**; **श्री एकांश ऐरोन**; **श्री मूलचंद कंसल**, सेक्टर 50, नोएडा

प्राकृतिक खेती को भी मिले प्रोत्साहन

– **पार्वती शुभा,** रिसर्च एनालिस्ट, सीईईडब्ल्यू
– **अपूर्व खंडेलवाल,** सीनियर प्रोग्राम लीड, सीईईडब्ल्यू

भारत अपने कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। जब मृदा अपक्षरण, भूजल गिरावट और कृषि लागत में वृद्धि जैसी चिंताएं उभर रही हैं, प्राकृतिक खेती एक आशाजनक समाधान बनकर सामने आई है। केंद्रीय बजट 2025–26 में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के बजट को 616 करोड़ रुपये तक बढ़ाना सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्राकृतिक खेती के व्यापक प्रसार में भारत के कृषि क्षेत्र को नेट जीरो के लक्ष्यों से जोड़ने और विकसित भारत 2047 विजन में योगदान करने जैसी अपार संभावनाएं मौजूद हैं।

आधुनिक खेती के विपरीत, प्राकृतिक खेती में प्रकृति आधारित रसायन–मुक्त उपाय शामिल होते हैं, जो स्थानीय ज्ञान पर आधारित होते हैं। नवंबर में शुरू हुए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन यानी एनएमएनएफ के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने 7.5 लाख हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती लागू करना, इच्छुक ग्राम पंचायतों में 15 हजार क्लस्टर बनाना और अगले दो वर्षों में एक करोड़ किसानों को जोड़ने जैसे लक्ष्य निर्धारित किए हैं। काउंसिल आफ एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वाटर (सीईईडब्ल्यू) के एक अध्ययन ने बीते एक दशक में प्राकृतिक खेती के बढ़ते प्रचलन को रेखांकित किया है। लेकिन एनएमएनएफ की सफलता इस बात पर टिकी हुई है कि राज्य कितनी तेजी और प्रभावी ढंग से इसे लागू करते हैं। चूंकि प्राकृतिक खेती भिन्न है, इसलिए इसका प्रचलन बढ़ाने के लिए सामान्य कृषि कार्यक्रमों की तुलना में अलग दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इसमें निम्न प्रयास महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

पहला, अति–स्थानीय स्तर पर मृदा स्वास्थ्य, कीट प्रबंधन और फसल विविधीकरण के लिए प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के पैकेज (पीओपी) विकसित करने चाहिए। स्थानीय रूप से उपयुक्त पीओपी को चिह्नित करने, उन्हें बेहतर बनाने और उनका विस्तार करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों, केंद्रीय और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और स्थानीय प्राकृतिक खेती संस्थानों को मिलकर काम करना चाहिए। आंध्र प्रदेश के प्राकृतिक खेती कार्यक्रम पर सीईईडब्ल्यू का अध्ययन बताता है कि प्राकृतिक खेती कार्यक्रम की सफलता में खेती का अति–स्थानीयकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्यों को रोजगार व आजीविका के विस्तार से जुड़े कर्मचारियों को किसानों के स्थानीय नवाचारों को खोजने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए सक्षम बनाना चाहिए।

दूसरा, प्राकृतिक खेती के उत्पादों के लिए अंतरिम ट्रेसबिलिटी समाधानों (उगाने व प्रसंस्करण की जानकारी जुटाने की व्यवस्था) को तैयार करना चाहिए। हालांकि एनएमएनएफ एक प्रमाणन तंत्र शुरू करने की योजना बना रहा है, लेकिन वर्तमान में ऐसे किसी तंत्र के अभाव से लघु और मध्यम अवधि में किसानों की बाजार के उन उपभोक्ताओं तक पहुंच बाधित कर सकती है, जो फसलों को उगाने व इसके प्रसंस्करण की जानकारी चाहते हैं। राजस्थान में प्राकृतिक और जैविक कृषि बाजारों के एक अध्ययन में सामने आया है कि जोधपुर स्थित एक लघु मध्यम उद्योग (एसएमई) ने वाट्सएप समूहों के माध्यम से किसानों को स्थानीय उपभोक्ताओं से सफलतापूर्वक जोड़ा है और उनके लिए फील्ड विजिट का आयोजन किया है। यह बताता है कि कैसे वैकल्पिक माडल प्राकृतिक खेती उत्पादों के प्रति भरोसे और मांग को मजबूत बना सकते हैं। किसानों की उपभोक्ताओं तक ऐसी सीधी पहुंच, प्राकृतिक कृषि उत्पादों के लिए स्थानीय स्तर पर विशेष हाट या बाजार और अन्य ऐसे नए बाजारी विकल्पों को बढ़ावा देने से भरोसा मजबूत हो सकता है और प्राकृतिक खेती के लिए व्यवहार्य बाजार संपर्क तैयार हो सकते हैं।

तीसरा, उच्च दर से फीडबैक देने वाले एक मजबूत निगरानी, मूल्यांकन और सीख (एमईएल) प्रणाली स्थापित करें। प्राकृतिक खेती के लिए निगरानी, मूल्यांकन और सीख (एमईएल) ढांचा कुल कृषि उत्पादकता, जल उपयोग दक्षता, कीट संक्रमण दर, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ, आहार विविधता और भूवर्गीय जैव विविधता स्कोर जैसे प्रमुख संकेतकों की निगरानी करने में सक्षम होना चाहिए। इससे कार्यक्रम के प्रभाव और इसे आगे बढ़ाने के अवसरों के बारे में जरूरी जानकारियां मिल सकेंगी। इसके बगैर पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य, घरेलू पोषण और पर्यावरणीय व आर्थिक जोखिमों का सामना करने के क्षमता में सुधार जैसे प्राकृतिक कृषि के महत्वपूर्ण लाभ अनदेखे रह सकते हैं। एनएमएनएफ स्टेट वाटर इंफार्मेटिक्स सेंटर्स जैसी पहलों से प्रेरणा ले सकता है, जो कृषि क्षेत्र और जल प्रबंधन के लिए रियल टाइम में निर्णय लेने के लिए विभिन्न विभागों के आंकड़ों को एकीकृत करते हैं।

हालांकि, एनएमएनएफ का डिजिटल निगरानी और रिमोट सेंसिंग पर ध्यान केंद्रित करना उच्च–आवृत्ति के साथ फीडबैक वाली निगरानी की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। लेकिन राज्यों की प्राकृतिक खेती सेल को जमीनी वास्तविकता का पता लगाने वाले हाई–फ्रीक्वेंसी लर्निंग सिस्टम के साथ इसमें सहायता करनी चाहिए। इस दिशा में सभी क्लस्टर में कृषि सखियों के माध्यम से भागीदारीपूर्ण निगरानी लाना बहुत महत्वपूर्ण है। इस दिशा में नाबार्ड की जीवा पहल एक उपयोगी माडल प्रदान करती है, जिसमें प्रत्येक लक्षित क्षेत्र में प्रगति की निगरानी करने और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट को बार–बार अपडेट करने के लिए प्रोजेक्ट फैसिलेटिंग एजेंसीज को शामिल किया गया था। हाई–फ्रीक्वेंसी लर्निंग प्रणाली स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कृषि पद्धतियों को अनुकूलित करने या कीट–पतंगों के समाधान जैसी चुनौतियों का समाधान कर सकती है और समय पर समाधान न मिलने पर किसानों को दोबारा रासायनिक उपायों की तरफ जाने से रोक सकती है।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन में भारतीय कृषि को रसायन–मुक्त, प्रकृति–आधारित बनाने की क्षमता मौजूद है। राज्यों को चाहिए कि वे प्राकृतिक खेती को विस्तार देने और इसके दीर्घकालिक प्रभावों को सुनिश्चित करने के लिए इन उपायों को प्रभावी ढंग से लागू करें।

*साभार : **दैनिक जागरण** (27 मार्च, 2025)*

गौशाला में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

भारत भवन के लोकार्पण का दृश्य

गाय अंगीकरण दिवस पर आरती के समय का दृश्य

श्री शुभम् अग्रवाल जी एवं परिवार द्वारा गोमाता के लिये आयोजित 56 भोग का दृश्य।

सम्पादकीय... (पृष्ठ 1 का शेष...)

तन्मयता के साथ जुटी हुई है।

गो आधारित उत्पाद बनाने का क्रम अनेक वर्षों से आदरणीय क. विनोद गुप्ता कर रहे हैं। प्रगति भी अच्छी हो रही है। परन्तु अब इसके परिमाण को कई गुना बढ़ाने की महती आवश्यकता है।

प्राकृतिक खेती जिसके मूल में गाय का गोबर व मूत्र का उपयोग है। वह लगातार बढ़ रही है। भारत सरकार ने 1 करोड़ परिवारों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य भी रखा है, लगभग 700 करोड़ का बजटीय प्रावधान भी किया है। अनेक गोशालाओं ने गो आधारित उत्पाद बनाकर बहुत ही प्रसिद्धि अर्जित की है। आगामी गौशाला कार्यकारिणी से मेरा निवेदन है कि अगले दो वर्ष गौशाला के Technological Upgradation को समर्पित करें। अगर आवश्यक हो तो हमको गो अनुसंधान में विकसित केन्द्रों से Technological Collaboration में भी हाथ बढ़ाना चाहिए। यह सदी भारत माता के परम वैभव के शिखर पर आरुण होने के लिए जानी जायेगी। यह सपना गौमाता को केन्द्र में रखे बिना पूरा नहीं होगा। कृषि व उद्योग दोनों के सामंजस्य के बिना अपेक्षित प्रगति असम्भव है। इसीलिए आदरणीय मोदी जी के नेतृत्व में सरकार किसान व कृषि दोनों की लगातार रचनात्मकता के साथ चिंता कर रही है। पूर्व सरकारों ने किसान का राजनैतिक दोहन ही किया था।

इस वर्ष जिला प्रशासन ने उत्तम गौशाला संचालन के लिए हमारी गौशाला समिति का सम्मान किया है। आगामी वर्षों में गौशाला की यह प्रसिद्धि नई कार्यकारिणी के नेतृत्व में उत्तरोत्तर बढ़े, इस आशा के साथ!

— आपका अपना

महेश बाबू गुप्ता

(mahesh@mbgupta.com)

अध्यक्ष की कलम से... (पृष्ठ 1 का शेष...)

ही धूमधाम से मनाया गया। आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि आज तक 600 परिवार गो अंगीकरण कर चुके हैं।

मित्रों आपके प्यार एवं सम्मान के लिए पुनः बहुत–बहुत धन्यवाद एवं आप सभी को चैत्र नवरात्री विक्रम संवत् 2082 की हार्दिक शुभकामनाएँ। इसी के साथ में अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि गौमाता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके स्नेह एवं सहयोग के लिए पुनः धन्यवाद!

आपका अपना –

टी.एन. चौरसिया

अध्यक्ष

(tnc_aig@rediffmail.com)

गौसदन में सहयोग के प्रकार

मासिक हवन (प्रातः 9 बजे)	: रू॰ 3,100/– (मास के प्रथम रविवार को – यजमान सहयोग)
गौग्रास योजना	: रू॰ 500 से 5,000/– तक मासिक
हरा चारा सहयोग	: रू॰ 5,100/–
सवामनी दलिया	: रू॰ 5,100/–
गाय अडॉप्शन योजना	: रू॰ 11,000/– (प्रति गाय) (प्रतिवर्ष – गाय की आयु तक)
गौदान	: रू॰ 31,000/–
छप्पन भोग	: रू॰ 31,000/–
भूसा सहयोग	: रू॰ 1,01,000/– (लगभग 1 ट्रक)
खल, चोकर व छिलका	: रू॰ 1,01,000/–

अपील

वर्तमान में गौशाला में लगभग 1700 से अधिक गोवंश हैं। भूसा/चारे का खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। गोपाष्टमी में जिन बंधुओं ने भूसा दान की घोषणा की थी, उन सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न करें।

श्री जी गोसदन

(पंजीकृत सोसायटी सं.–592, अधिनियम सं.–21, सन् 1860 के अर्न्तगत)

भूखण्ड सं. 7, सैक्टर 94, नौएडा (उ.प्र.)

मो. : 8882425010

ई–मेल : shreejeegausadan94@gmail.com

वेबसाइट : www.shreejeegausadan.com

अध्यक्ष : श्री टी.एन. चौरसिया (मो. : 9350556530)

महासचिव : सीए विकास अग्रवाल (मो. : 9810015863)

कोषाध्यक्ष : श्री प्रमोद शर्मा (मो. : 9810158266)

प्रबन्धक : श्री संतोष सिंह (मो. : 7428350639)

दान/सहयोग राशि हेतु जानकारी :

SHREE JEE GAUSADAN

Account No. : **923010022147753**

Name of Bank : **AXIS BANK**
Sector 44, Noida (U.P.)

IFSC Code : **UTIB0001788**

अथवा **QR** कोड स्कैन करें

PRAVEK

100% शुद्ध और पवित्र

200 मिली के पैक में उपलब्ध

गोजल

पाचन क्रिया सुधार हेतु

आयुर्वेद में गाय के गौमूत्र को एक संजीवनी कहा गया है, जो रोगों को भगाए और दीर्घायु प्रदान करे।

प्रवेक गोजल को आसवन के बाद काँच की बोतल में पैक किया जाता है, ताकि वह सभी अशुद्धियों से मुक्त हो व गोजल के स्वाभाविक रुपी अम्लीय गुणों से बचाता हो।

उपयोग

- कृमि रोग
- कण्डू रोग
- कुष्ठ रोग
- दोष जन्य उदर विकार
- अफारा
- मेदोरोग
- अध्यमान, आदि में लाभकारी

मात्रा

20 मिली प्रवेक गौजल को जल में मिलाकर दिन में एक बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

CUSTOMER CARE
+91 9990990999 | customercare@pravek.com
www.pravek.com